प्रधानमंत्री का भारतीय विदेश कांग्रेस तथा संगठनों के समक्ष दिया गया अभिभाषण

24 सितम्बर, 2004

न्यूयार्क

" मैं आज की शाम आप लागों के बीच उपस्थित होकर बहुत अच्छा अनुभव कर रहा हूँ तथा आपकी गर्मजोशी तथा हार्दिक स्वागत के लिए आपका धन्यवाद करता हूं । आप संयुक्त राज्य में न केवल भारत के एक बहुत बड़े वर्ग तथा भारतीय अमरीकी समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि 'भारत' के वास्तविक चेहरे का भी प्रतिनिधित्व करते हैं - विभिन्नता में एकता, लोकतांत्रिक बहुलवाद के सिद्धांतों के लिए प्रतिबद्धता तथा संघ एवं उद्यम की स्वतंत्रता के भारत तथा संयुक्त राज्य अमरीका दोनों ही समर्थक हैं ।

प्रायः भारत तथा संयुक्त राज्य अमरीका का विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के रूप में उल्लेख किया जाता है जो बहुलवाद तथा उदारवाद के मूल्यों तथा सिद्धांतों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को साथ-साथ बांधते हैं । इन पद्बंधों का बहुत अधिक प्रयोग किया जा चुका है तथा यह पुराने पड़ चुके हैं लेकिन मौजूदा समय में इसने नए आयाम प्राप्त कर लिए हैं । राष्ट्रपति बुश तथा मैं, दोनों, इस बात से सहमत हैं कि जब हम दोनों इसी सप्ताह में पहले मिले थे तब लोकतंत्र के प्रति हमारी पारस्परिक प्रतिबद्धता दोनों देशों को जोड़ने वाला महत्त्वपूर्ण सेतु रहा है ।

लोकतंत्र में बढ़ रहा साझा अनुभव हमारी सामूहिक मानसिकता का महत्त्वपूर्ण पहलू है । हमने अपने बाल्यकाल से ही कानून के तथा व्यक्ति विशेष के विचारों को

व्यक्त करने तथा रखने का सम्मान करना सीखा है, हमने संघ तथा उद्यम की स्वतंत्रता के मूल्य के बारे में सीखा है । हमने बहु-सांस्कृतिक, बहु-धार्मिक, बहु-भाषी तथा बहु-जातीय राष्ट्र में अन्तर्निहित बहुलवाद को जीना सीखा है ।

आप भारतीय अमरीकियों तथा विदेशी भारतीयों ने, जिस रूप में आप यहां पर एकीकृत हैं, बहुत से अन्य समुदायों तथा जातीय ग्रुपों के लिए एक उदाहरण पेश किया है । आप अपने पड़ोसियों के साथ शांति से रहते हैं, अपने समुदायों की समृद्धि, अपने कार्यस्थलों की उत्पादकता तथा अपने शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा ज्ञान आधारित संगठनों की सृजनात्मकता के लिए योगदान करते हैं ।

मैं यहाँ आज शाम आप के बीच रह कर विशेषरूप से आनंदित महसूस कर रहा हूँ क्योंकि आप तथा यहाँ एकत्रित आप के संगठन, हमारी विविधता तथा बहुलवादी समाज के वास्तविक स्वरूप का बहुत रूपों में प्रतिनिधित्व करते हैं । यदि कोई एक बात जो भारत और संयुक्त राज्य अमरीका के बीच सही अर्थों में समान हैं, वह है हमारे राष्ट्रीय व्यक्तित्व का वैविध्यपूर्ण स्वरूप । कुछ लोग अमरीका को "मेल्टिंग पॉट" (जहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों तथा सिद्धांतों का मिश्रण हो) तथा कुछ "सलाद बोल" कहते हैं। लेकिन फिर भी वर्णन ठीक वैसा ही है जैसाकि हम अपने राष्ट्र को परिभाषित करने के लिए करते आए हैं । पंडित जवाहर लाल ने "विविधता में एकता" की बात की थी । हमारा संविधान इस सिद्धांत पर आधारित है । हमारी राष्ट्रीय अस्मिता इन मूल्यों पर आधारित है । सदियों से, हमारा देश एक उदार समाज एक "मेल्टिंग पॉट" तथा "सलाद बोल" रहा है । विश्व में कोई भी देश ऐसा नहीं है, जिसमें इतनी अधिक भाषा, इतने

अधिक धर्म, इतने अधिक व्यंजन, इतने विविध गीत तथा नृत्य परम्पराएं, इतने विविध रंग व रूप के लोग हों जितने कि भारत में हैं ।

भारतीय विदेश कांग्रेस तथा यहाँ के अन्य संगठनों के मेरे मित्रो, आप इस विविधतापूर्ण राष्ट्र में अन्य विविधतापूर्ण राष्ट्र के मूल्य तथा आदर्श लेकर आए हैं । यही वह बहुलवाद तथा उदारवाद है जिसे कि जॉन हॉपकिन विश्वविधालय में पढ़ा रहे मेरे युवा मित्र सुनील खिलानानी, ने "आइडिया ऑफ इंडिया" प्रदर्शित किया है ।"आइडिया ऑफ इंडिया", "आइडिया ऑफ अमरीका" से भिन्न नहीं है । दोनों के विचारों के मूल तत्व में "हमारे युग का विचार" है - अनेकता में एकता ।

यही वह विचार है जो हमारे वर्तमान समय की दो चुनौतियों, अर्थात वैश्वीकरण तथा आंतकवाद के प्रति हमारे दृष्टिकोण को परिभाषित करता है । भारत और अमरीका दोनों अपने तरीके से इन दोनों वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करने का प्रयास कर रहे हैं । हमारा दृष्टिकोण लोकतंत्र तथा बहुलवाद के प्रति हमारी सतत् प्रतिबद्धता पर आधारित हैं । वैश्वीकरण की आर्थिक प्रक्रिया में हमारे समाज की मूल विविधता का सम्मान करना चाहिए । आतंकवाद के प्रति हमारी राजनैतिक प्रतिक्रिया भी लोकतंत्र तथा बहुलवाद की हमारे चिरकाल से पोषित मूल्यों पर आधारित होनी चाहिए ।

यहां न्यूयार्क में इस सप्ताह के आरंभ में भारतीय अमरीकियों की एक और सभा में संबोधन करते हुए, मैंने कहा था कि मैं प्रवासी भारतीयों की मानसिकता को बहुत महत्त्व देता हूँ क्योंकि जब हमारे परिवार को अपने उस पैतृक गांव को छोड़ना पड़ा था जो अब पाकिस्तान में है मैं तब स्वयं एक प्रवासी था (प्रवासी के रूप में घर और

आजीविका की तलाश में मेरे परिवार तथा मेरे परिवार जैसे दूसरे परिवारों को जीने के लिए अत्यन्त श्रम साध्य कार्य करना पड़ रहा था तथा भविष्य में विश्वास रखना पड़ रहा था क्योंकि अतीत तो अंधकारमय था और वर्तमान संघर्षपूर्ण । संयुक्त राज्य अमरीका में भी बहुत से प्रवासी समुदायों के साथ यही बात थी ।

किंतु, देवियो और सज्जनो, आप यहां सफल हुए हैं, इसके लिए आपको अपने देश के प्रति, उस अच्छी शिक्षा तथा कौशल के लिए जिसकी वजह से आप में एक अच्छी नींव पड़ी तथा अपने मेजबान देश के प्रति और आगे विकास के लिए आप को अवसर प्रदान करने के लिए आभारी होना चाहिए । यही कारण है कि मैं सदैव ही इस आशावादिता से प्रभावित हुआ हूँ जो भारतीय अमरीकियों की मानसिकता का एक विशिष्ट गुण है । आपने अमरीकियों की "कर सकते हो" की भावना को प्रतिध्वनित किया है । यही कारण है से आप किसी हद तक अधीर रहते हुए भी अपने देश भारत, के प्रति लगातार स्नेह, प्यार, उत्कंठा बनाए रखते हैं ।

यही 'कर सकने' की भावना बड़ी संख्या में भारतीय अमरीकी बच्चों को "स्पैलिंग बी" परीक्षा तथा "गणित ओलंपियाड" में शिखर पर ले गई है । यही वह भावना है जो कल्पना चावला को अंतरिक्ष में ले गई तथा हाल ही में इसी भावना ने फिजी में रहने वाले भारतीय विजय सिंह को बोस्टन में टाइगर वुड को हराकर चैम्पियन का खिताब दिलाया । वैश्विक भारतीयों का प्रतिष्ठित वर्ग कला तथा सिनेमा से लेकर कंप्यूटर विज्ञान तथा जैव प्रौद्योगिकी तक के क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं तथा हमें यह जानकर हर्ष होता हैं कि इनमें से बहुत से प्रतिष्ठित लोगों ने अमरीकी भूमि पर समृद्धि प्राप्त की है । इस देश, इन भारतीय परिवारों तथा भारत के उस उदार दृष्टिकोण की प्रशंसा करनी

होगी जो हम सभी का है, यही भावना हममें रहती है हम चाहे विश्व में कहीं भी हों, उसी को अपना परिवार समझते हैं ।

प्रवासी भारतीय आधी सहस्राब्दी से भी पूर्व अमरीका आए थे । कुछ काम की तलाश में, कुछ पैसा कमाने, कुछ अत्याचार से बचने के लिए तथा कुछ अन्य कठिनाइयों तथा अभावों से बचने के लिए अमरीका आए थे । इस संबंध में भारतीय अमरीकी समुदाय अनूठा समुदाय है, अधिकांश लोग यहाँ ज्ञान, कौशल, प्रशिक्षण तथा व्यावसायिक अवसरों की तलाश में आए । आप यहां केवल आशा लेकर नहीं आए, बल्कि एक उद्देश्य भी लेकर आए तथा इसी उद्देश्य से उद्यम तथा अवसर की इस महान भूमि पर, आपका योगदान साकार हुआ ।

अमरीकी इतिहास में, किसी भी प्रवासी समूह ने एक पीढ़ी में इतनी अधिक सफलता तथा सम्मान प्राप्त नहीं किया है जितना कि आप भारतीय अमरीकियों को प्राप्त हुआ है । इस समुदाय के आकार तथा हाल ही में यहां आने वालों की संख्या को देखते हुए आपने संयुक्त राज्य अमरीका के समाज तथा अर्थव्यवस्था में एक भूमिका निभाई है जो वह उससे कहीं बड़ी है जो आपसे अपेक्षित थी । आपके कौशल ने अमरीका को प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायता की है, आप का दिमाग अत्याधुनिक अनुसंधान कार्य में लगा हुआ है, आप की सेवाएं विभिन्न प्रकार के व्यवसायों से जुड़ी हुई है जिससे इस देश में जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है । आपकी उद्यमशीलता ने अमरीकी कंपनी जगत में अधिक प्रभावी भूमिका हासिल कर ली है । मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि भारतीय अमरीकी, अब सिनेमा तथा मीडिया जैसे सृजनात्मक

क्षेत्रों में भी सक्रिय हो गए हैं । मेरी पुत्रियां श्री श्यामलन तथा श्री नायर की फिल्में देखकर सदैव रोमांचित होती है ।

भारतीय अमरीकी समुदाय ने भूंडलीकरण का एक उदाहरण पेश किया है तथा यह हमारे संबंधों के एक नया आयाम दे सकती है । जैसे-जैसे बाधाएं कम हो रहीं हैं, हमारे मानवीय संसाधन वैश्विक विकास की दिशा को आकार देने में सहायता कर सकते हैं । सही नीतियों तथा निर्णयों से, भारत ज्ञान आधारित आर्थिक सुपर पावर के रूप में उभर सकता है । आउटसोर्सिंग, कॉल सेंटर, बिजनेस प्रोसेसिंग आउटसोर्सिंग भारत में होने वाली भावी घटनाओं का सहज पूर्वाभास है । भारत अमरीकी उद्यमियों के लिए एक निरन्तर विश्वसनीय साझेदार सिद्ध हो रहा है, समय तथा दूरी, अतीत की कठिनाइयाँ आज दूर हो गई हैं ।

आप सभी ने परिश्रम, सृजन, उद्यम, लोकतंत्र तथा बहुलवादी समाज की उन मूलभूत मान्यताओं के प्रति प्रतिबद्धता बांछनीय प्रतिष्ठा अर्जित की है जिसने हमारे राष्ट्रों को एक सूत्र में बांधा है । इससे आप अपने कार्यस्थल में अपने सहयोगियों, अपने समुदायों में अपने पड़ोसियों तथा अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के बीच भारत के बारे में अमरीकी अवधारणा को अनुकूल बना सकेंगे । मैं आप सभी को भारत के लोगों की ओर से अपना आभार व्यक्त करता हूँ ।

मुझे उन मुद्दों की जानकारी है जिनका भारत के साथ आप के संबंधों पर प्रभाव पड़ रहा है । इनमें से कुछ मुद्दे, जैसे पी आई कार्ड की समस्या पर पहले से ही कार्रवाई की जा रही है तथा कुछ मुद्दे जैसे दोहरी नागरिकता, की समीक्षा की जा रही है। हमारी

सरकार ने विदेश में रह रहे भारतीयों से संबद्ध मसलों के लिए एक नए मंत्रालय का गठन करने की पहल की है ताकि उन मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया जा सके जिनसे आप परेशान हो रहे हैं । एक सम्पूर्ण नए मंत्रालय के गठन में सदैव ही कुछ समय लगता है, लेकिन मुझे विश्वास है कि जैसे ही इस मंत्रालय के गठन की कार्यवाही पूरी होगी, यह अपना कार्य करना शुरू कर देगा ।

मुझे इस तथ्य की भी जानकारी है कि भारतीय अमरीकी तथा विदेशों में रहने वाले भारतीयों तक पहुंचने में, विगत में, हमारी सरकार ने प्रायः भारत में निवेश पर संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाया है तथा इस पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया है । इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है जिसमें आप भारत के विकास में योगदान दे सकते हैं । किंतु, मैं अधिकाधिक लोगों तक अपनी अपील पहुंचाना चाहता हूँ । मैं यह जानता हूँ कि आप में से अधिकांश पेशेवर हैं तथा कारोबारी तथा उद्यमी नही हैं तथा भीतरी निवेश ही एकमात्र तरीका नहीं है जिस से आप राष्ट्र की प्रगति में योगदान दे सकते हैं । मैं आपको राष्ट्र की प्रगति में योगदान करने के लिए आमंत्रित करना चाहूंगा। मैं आप सभी को शिक्षण तथा अनुसंधान, आधारभूत संरचना तथा हमारे सेवा सेक्टर की गुणवत्ता में और अधिक प्रत्यक्ष रूप से योगदान के लिए आमंत्रित करना चाहूंगा ।

मैं भारत में शिक्षा, चिकित्सा, वित्तीय सेवाओं, पर्यटन तथा अन्य सेवाओं तथा सेक्टर को विश्व-स्तरीय बनाने के लिए आपके द्वारा प्रत्यक्ष योगदान करने के संबंध में आपके विचार आमंत्रित करता हूँ । हम यहां केवल डॉलरों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि विचारों, व्यक्तिगत पहलों, सामुदायिक कार्रवाई की बात कर रहे हैं । अपनी

ओर से, मैं आप लोगों को यह आश्वासन देना चाहूँगा कि हमारी सरकार इस पर खुले दिमाग से विचार करेगी तथा किसी भी नए विचार पर गौर करेगी । ऐसे सभी पारस्परिक कार्यों के लिए "भारत का आप्रवास मंत्रालय" नोडल बिन्दु होगा ।

केवल यही एक अवसर है जब मैंने संयुक्त राज्य अमरीका में प्रधानमंत्री के रूप में अपनी प्रथम यात्रा पर न्यूयार्क को पहला पोर्ट चुना है । न्यूयार्क 11 सितंबर की त्रासदी की अपनी प्रतिक्रिया में "विभिन्नता में एकता" का प्रतीक बन गया है, मैं मूर्खतापूर्ण आतंक के शिकार हुए लोगों के प्रति अपनी श्रदांजलि अर्पित करता हूँ । भारत में हम बहुत से ऐसे भारतीयों के दुःखों में न केवल भागीदार हुए हैं जो इस त्रासदी में मारे गए बल्कि अमरिकी लोगों तथा विश्व के ऐसे लोगों के दुखों में भी शामिल हैं जो किसी न किसी रूप में इस त्रासदी से प्रभावित हुए हैं, भारत और संयुक्त राज्य अमरीका आतंकवाद के इस संघर्ष में इतिहास के एक ही मोड़ पर खड़े हैं । यह हमारे लोकतंत्र की प्रकृति में है कि हम ऐसे खतरों तथा धमकियों का स्वयं शिकार हो जाते हैं । लेकिन जब ऐसी कोई त्रासदी होती है हम दृढ़ रहते हैं जिससे कि खुले विचारों वाले, स्वतंत्र तथा लोकतांत्रिक समाज को बनाए रखने में हमारा संकल्प कमजोर न पड़े । हम आतंकवाद के उन्मूलन तथा विनाश के लिए हर वैधानिक कदम उठाएंगे, लेकिन लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति समानरूप से प्रतिबद्ध भी रहेंगे । अंततः यही तथ्य हम दोनों राष्ट्रों के विशिष्ट चरित्र को परिभाषित करता है ।

मुझे यहां उपस्थित होकर आपसे बातचीत करने के लिए मैं आपका पुनः धन्यवाद करता हूं । जय हिंद"